CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी 264

२४

दक्षिण की मीरा

समाज विकास माला

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला : १७२

दक्षिण की मीरा

महान भक्त-कवयित्री आण्डाल का परिचय

लेखक
महेशनारायण 'भारतीभक्त'

नं. 4248
हि 294
पुस्तक भेंट के निमित्त है

सम्पादक
यशपाल जैन

१९६३
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६३
मूल्य
चालीस नये पैसे

मुद्रक
लखेरवाल प्रेस,
नई दिल्ली-५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से जो कोशिश हो रही है वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें बहुत-सी पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी दिये गये हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि यदि उन्हें पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी प्रकार सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठकों से

संत कहीं भी पैदा हों, वे सबके होते हैं। मीरा उत्तर भारत में पैदा हुईं, लेकिन उनके भजन सारे देश के दिल को गुदगुदा देते हैं। यही बात दक्षिण के संतों के साथ है। उनकी वाणी उत्तर भारत के दिलों को हिला देती है।

इस पुस्तक में ऐसी ही एक संत-कवयित्री का परिचय दिया गया है। उनका नाम था आण्डाल। वह दक्षिण में पैदा हुईं, लेकिन उन्होंने अपनी रचनाओं में भक्ति की ऐसी धारा बहाई कि जो भी उसमें डुबकी लगाता है, उसे बड़ी शान्ति और शीतलता अनुभव होती है।

मीरा की भांति आण्डाल की भी जीवन में कड़ी परीक्षा हुई, पर अपने इष्टदेव के प्रति उनकी भक्ति इतनी अचल थी कि वह सारी कठिनाइयों को पार कर गईं।

आप इस पुस्तक को जरूर पढ़ें। आपका ज्ञान बढ़ेगा। आपको लाभ पहुंचेगा।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दक्षिण की मीरा

: १ :

दक्षिण भारत में श्री विल्लीपुत्तूर नामक एक प्रसिद्ध तीर्थ है। वह राज्य के रामनाद जिले में है। वहां विष्णु का एक पुराना मंदिर है, लेकिन लोग उस मंदिर को ही देखने के लिए वहां नहीं जाते हैं। श्री विल्लीपुत्तूर का नाम इसलिए प्रसिद्ध हुआ है कि वह दक्षिण की एक महान भक्त-कवयित्री आण्डाल की जन्मभूमि है। दक्षिण में शायद ही कोई ऐसा होगा जो आण्डाल के नाम से परिचित न हो। उत्तर भारत में जिस तरह मीरा के पदों का प्रचार है, उसी तरह दक्षिण भारत में आण्डाल के पद घर-घर गाये जाते हैं। कुछ लोग तो यहां तक मानते हैं कि आण्डाल साक्षात् भूदेवी की अवतार थीं। दक्षिण के हर विष्णु-मंदिर में उसकी मूर्ति प्रतिष्ठित है और लोग बड़ी श्रद्धा से उसकी पूजा करते हैं।

पुराने समय में श्री विल्लीपुत्तूर के आस-पास का प्रदेश जंगलों से घिरा था। वहां पहले आदिवासी लोग रहा करते थे। उन आदिवासियों में 'मल्लि'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम की कोई नामी महिला हुई थीं, जिसके कारण वह इलाका 'मल्लिनाहु' कहलाता था। मल्लि के लड़के का नाम 'विल्ली' था। वह भी बड़ा प्रभावशाली निकला। उसने एक बार आस-पास के जंगलों को साफ करना शुरू किया। जंगल साफ करते-करते अचानक उसे एक बहुत ही पुराना विष्णु मंदिर मिला। उसने उस मंदिर का उद्धार किया और उसके चारों ओर एक गांव बसाया। विल्ली के नाम पर ही यह गांव 'श्रीविल्लीपुत्तूर' कहलाया। यह अब दक्षिण का एक महान पुण्यक्षेत्र बन गया है।

आज से कोई तेरह सौ साल पहले श्रीविल्ली-पुत्तूर में एक आलवार भक्त रहते थे। उनका असली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम वैसे विष्णुचित्त था, किन्तु लोग उनको पेरियाल-वार कहते थे। आलवार दक्षिण के प्राचीन वैष्णव भक्तों को कहते हैं, जिनकी संख्या बारह है। बारहों आलवारों में पेरियालवार का बहुत ऊंचा स्थान है। पेरियालवार शब्द का अर्थ ही होता है--महान आलवार। आण्डाल उन्हींकी पालिता कन्या थी।

पेरियालवार बड़े ही ज्ञानी और भावुक भक्त थे। अपनी कुटिया के आगे उन्होंने एक फुलवारी लगा रखी थी। रंग-बिरंगे फूल उसमें खिला करते थे। फूलों को खिलते देखकर उनको लगता, जैसे भगवान ही प्रसन्न होकर मुस्करा रहे हैं। रोज बड़े तड़के वे उठते और फुलवारी में जाकर ताजे फूल तोड़ते। भगवान के लिए उन फूलों की माला वह अपने-आप तैयार करते थे। भगवान की पूजा-अर्चना करना और उनकी महिमा गाना ही उनका रोज का काम था।

सदा की तरह एक दिन पेरियालवार बड़े सवेरे उठे। फुलवारी में उस दिन बहुत सारे फूल खिले थे। सुबह की ठंडी हवा और फूलों की मधुर गंध ने उनके मन को पुलकित कर दिया था। फूल तोड़ते समय वह भावों में डूबकर भगवान की महिमा का गान करने लगे। फूलों की डलिया भर चली थी कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अचानक उन्होंने एक तुलसी के पौधे के नीचे किसी चीज को हिलते-डुलते देखा। उनको बड़ा कौतूहल हुआ। पास जाने पर उन्होंने देखा तो उनके अचरज का ठिकाना न रहा। वहां एक नवजात बच्ची पड़ी हुई थी। फूल की तरह उस कोमल बच्ची को उन्होंने पुलकित हो तुरंत गोद में उठा लिया।

वह भागे-भागे मंदिर में गये और भगवान की मूर्ति के सामने उस बच्ची को रखकर कहने लगे, "हे प्रभो, मैं आज एक अनूठा फूल तुम्हारे लिए लाया हूं। यह बच्ची तुमने दी है, तुमको ही भेंट करता हूं।"

कहते हैं, पेरियालवार को उसी समय आकाश-वाणी सुनाई दी--"इसका नाम गोदा रखना और अपनी बेटी की तरह इसका पालन-पोषण करना!"

तमिल में 'गोदा' शब्द का अर्थ होता है--'फूलों की माला-सी सुन्दर'। गोदा वास्तव में वैसी ही सुन्दर थी। पेरियालवार ने बड़ी ममता और उछाह से उसे पाला-पोसा। वह दूज के चांद की तरह बढ़ती गई। मां की ममता, पिता का दुलार और गुरु का ज्ञान--सबकुछ उसे पेरियालवार ने दिया।

भक्तराज की पुत्री होने के कारण गोदा के मन पर भक्ति के संस्कार शुरू से ही जमते गये। फूल तोड़ना,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माला गूंथना, पूजा की सामग्री जुटाना आदि सब कामों में वह अपने पिता की मदद करती। पिता जब गाते, तब वह भी उनके साथ गाती। भगवान की आराधना के सिवा बाप-बेटी को और कोई काम नहीं था। इस सबका असर धीरे-धीरे गोदा पर यह पड़ा कि उसने मान लिया, उसका जीवन केवल भगवान के लिए है। वह दिन-रात भगवान के ही बारे में सोचा करती। उनको कौन-सा फूल पसन्द आयेगा, कैसी माला पहनकर वे प्रसन्न होंगे—इसी तरह की बातों पर वह घंटों विचार किया करती थी।

एक दिन मंदिर के पुजारी ने पेरियालवार से कहा, "आपकी माला भगवान की पूजा के योग्य नहीं है, क्योंकि किसीने उसे पहनकर अपवित्र कर दिया है।" पेरियालवार को इसपर सहसा विश्वास नहीं हुआ, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं। ताजे फूलों की दूसरी माला तैयार की और भगवान को चढ़ाई। लेकिन दूसरे दिन भी वही बात हुई। जो माला वह घर से पूजा के लिए ले गये थे, उसे लेने से पुजारी ने फिर इन्कार कर दिया। यही नहीं, उसने माला में से एक बाल निकालकर दिखाते हुए कहा, "आप स्वयं देख लीजिये। इस माला को किसीने पहना है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कई फूलों की पंखुड़ियां भी मसली हुई-सी लगती हैं।"

पेरियालवार यह सुनकर चिंता में पड़ गये। भगवान को चढ़ाई जानेवाली माला कौन पहन सकता है! माला तो गोदा तैयार करती है। वह पहन लेगी, ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। फिर बात क्या है? प्रभु की यह कैसी माया है! इस तरह के विचारों में काफी देर तक खोये रहे।

दूसरे दिन पेरियालवार जरा पहले ही नहा-धोकर मंदिर जाने के लिए तैयार होगये। गोदा कुटिया के अन्दर थी। उन्होंने आवाज दी, "बेटी, माला तैयार होगई क्या?"

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। पेरियालवार ने झांककर देखा तो स्तब्ध रह गये। पुजारी के कथन की सचाई उनकी आंखों के आगे थी। गोदा शीशे के सामने बैठी थी। भगवान के लिए जो माला उसने तैयार की थी, वह उसके गले में झूल रही थी। वह उस माला को देखती, उसकी शोभा को निहारती, धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाती जा रही थी।

पेरियालवार ने झुंझलाकर कहा, "अरी नासमझ! तू यह क्या कर रही है?"

गोदा का ध्यान भंग हुआ। वह चौंकी, फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिता को देखकर तुरन्त संभल गई। गले से माला निकालते हुए वह बोली, "कुछ नहीं पिताजी, देखिये, आज मैंने कितनी सुन्दर माला बनाई है!"

भोली गोदा का यह उत्तर पिता को नहीं भाया। जीवन में पहली और शायद आखिरी बार उन्हें क्रोध आया था। वह गरज उठे--"तूने सर्वनाश कर डाला! भगवान की माला पहनकर अपवित्र कर दी। ऐसी मूर्खता आखिर तूने कैसे की? किसने कहा था तुझे ऐसा करने के लिए? ओह, तेरी नादानी के कारण मेरा सब धर्म-कर्म नष्ट होगया। मैं अब क्या मुंह लेकर प्रभु के आगे जाऊंगा!"

गोदा इतनी भोली थी कि पिता के क्रोध से डरने के बदले खिल-खिलाकर हँस पड़ी। बोली, "पिताजी, आप इतने नाराज क्यों होते हैं? आज यह कोई नई बात तो हुई नहीं है। मैं तो रोज ही माला गूंथती हूं और पहनकर देख लेती हूं कि अच्छी बनी या नहीं। जो माला मुझे ही नहीं जंचेगी, वह भला उन्हें कैसे पसन्द आयेगी?"

पेरियालवार ने गोदा का यह जवाब सुनकर अपना सिर पीट लिया--"इस मूरख से बात करना व्यर्थ है। भगवान मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे। महीनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से मैं अपवित्र माला ही उनको चढ़ाता रहा हूं। आखिर दोष मेरा ही है। प्रभु के लिए माला तो मुझे स्वयं अपने हाथों से गूंथनी थी !" इतना कहते-कहते वह बहुत अशान्त हो उठे और जल्दी-जल्दी दूसरी माला गूंथने लगे, क्योंकि पूजा का समय पास ही था।

पिता का ऐसा रंग-ढंग देखकर गोदा को लगा कि कोई बड़ी बात होगई है। वह पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी-की-खड़ी रह गई। उसके हाथ से वह माला छूटकर नीचे जा गिरी, जिसे उसने बड़े जतन से तैयार किया था। इतनी सुन्दर माला इससे पहले वह कभी नहीं गूंथ पाई थी। भगवान इसे पाकर कितने प्रसन्न होंगे, यही सोचकर वह मगन थी, लेकिन यह क्या होगया अचानक ! उसके माला पहन लेने मात्र से भगवान क्यों नाराज होने लगे ! यह सोचते-सोचते वह विचलित हो उठी। इसी बीच पेरियालवार ने दूसरी माला तैयार कर ली। वह गोदा से कुछ बोले बिना ही मंदिर चले गये। उसको साथ चलने के लिए भी नहीं कहा। यह देखकर उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये। बड़ी देर तक वह सामने पड़ी हुई माला को अपने आंसुओं से भिगोती रही।

पेरियालवार दिन भर बहुत ही उदास रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ खाया-पिया भी नहीं। रात में बड़ी देर तक उनको नींद नहीं आई। आधी रात बीते जब उनकी आंख लगी तो उन्होंने एक सपना देखा। श्रीरंगम के शेषशायी भगवान रंगनाथ कह रहे थे, "भक्तराज, व्यर्थ क्यों दुःखी होते हो! तुमने कोई अपराध नहीं किया है। मैं गोदा के प्रेम के वश में हूं। उसकी पहनी हुई माला मुझे बहुत प्रिय है। आगे से मुझे वही भेंट करना!"

विष्णुभक्त पेरियालवार मारे आनन्द के गद्‌गद हो उठे। भगवान के चरणों में गिरने की उन्होंने जो चेष्टा की, तो सहसा उनकी आंख खुल गई। वह हड़बड़ाकर उठ बैठे। उन्होंने उसी समय गोदा की ओर देखा। वह एक कोने में चटाई पर पड़ी सो रही थी। चेहरा देखने से ऐसा लगता था, मानो वह काफी रात गये तक जागती और आंसू बहाती रही है। पेरियालवार दीपक के मंद प्रकाश में एकटक उसको देखते रहे। उन्हें सहसा ख्याल आया कि इसने भी आज दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं होगा। स्नेह और करुणा का सागर उनके हृदय में लहराने लगा। तुरंत उन्होंने गोदा को जगाया और आनंद के आंसू बरसाते हुए बोले, "बेटी, तू धन्य है! तेरे कारण ही आज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

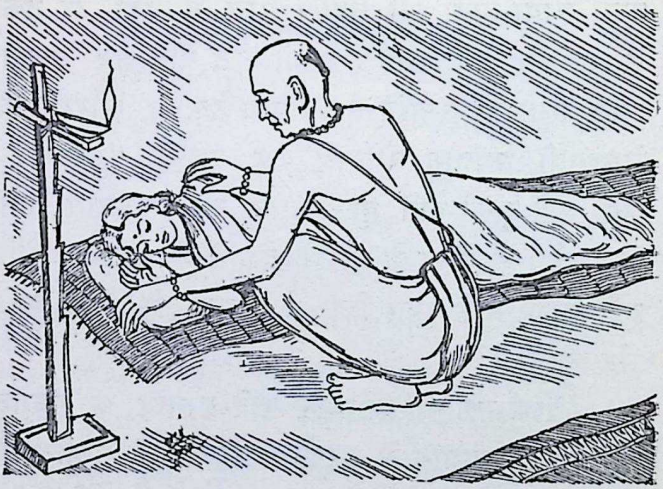

पिता ने गोदा को जगाया

मैं भी धन्य होगया। अभी स्वयं भगवान ने मुझे दर्शन दिये हैं। अब मैं जान पाया कि तूने उन्हें अपने प्रेम के वश में कर लिया है। गोदा की जगह आज से मैं तुझे आण्डाल कहूंगा।"

बस, गोदा उसी समय से आण्डाल के नाम से प्रसिद्ध हुई। 'आण्डाल' शब्द का अर्थ होता है—'अपने प्रेम से दूसरे को वश में करनेवाली'।

संयोग की बात कि उसी रात भगवान ने मंदिर के पुजारी को भी सपने में आदेश दिया कि आगे से गोदा की पहनी हुई माला को लेने से इन्कार न करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २ :

आण्डाल अब सयानी होगई। भगवान के प्रति उसका प्रेम-भाव इतना गहरा होगया था कि वह कुमारी कन्या की तरह भगवान के साथ अपने ब्याह की कल्पना करने लगी। वह रहती थी श्रीविल्लीपुत्तूर में, लेकिन उसका मन सदा गोकुल की गलियों और वृन्दावन के कुंजों में विहार करता था। वह सोचा करती कि कृष्ण ही मेरे दूल्हा हैं और उन्हींके साथ गाजे-बाजे के साथ मेरा ब्याह होगा। भाव-विभोर होकर वह कृष्ण की लीलाओं का गान करने लगती। उस समय उसके मुंह से अपने-आप नये-नये पद निकलने लगते। ये मधुर पद ही आगे 'तिरुप्पावै' और 'नाच्चियार तिरुमोलि' के पद कहलाये।

एक रात आण्डाल ने सपना देखा कि भगवान कृष्ण के साथ उसके ब्याह का समय समीप आगया है। धूमधाम से उसके विवाह की तैयारियां हो रही हैं और मण्डप सजाया जा रहा है। सवेरे जागने पर उसने यह बात अपनी सखियों से कही। विवाह के अवसर पर जो प्रथाएं उन दिनों प्रचलित थीं, उनपर कई मधुर पद रच डाले। आज भी तामिलनाड में विवाह के मंगल अवसर पर वे पद गाये जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पेरियालवार को अब आण्डाल के विवाह की चिंता सताने लगी। एक रात भगवान ने फिर स्वप्न में उन्हें दर्शन दिये और कहा, "भक्तराज, आण्डाल अब विवाह-योग्य होगई है। उसको लेकर श्रीरंगम के मन्दिर में आओ। मैं उसका पाणिग्रहण करूंगा।"

पेरियालवार अपने आराध्य का आदेश कैसे टाल सकते थे! भगवान की धरोहर भगवान को सौंप दी जाय, यह उनके लिए बड़ी प्रसन्नता की बात थी। उन्होंने यात्रा की तैयारियां शुरू कर दीं।

मदुरै में उन दिनों पांड्य राजा राज करते थे। एक रात उन्हें भी भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि वह आण्डाल को श्रीविल्लीपुत्तूर से श्रीरंगम ले आयें। इसी तरह का स्वप्न श्रीरंगम के मंदिर के पुजारियों को भी आया। फिर क्या था, सब-के-सब श्रीविल्लीपुत्तूर आ धमके। विष्णुप्रिया आण्डाल के चरणों की धूल सबने अपने सिर पर ली और राजसी धूमधाम से उसकी सवारी निकली। वह सजी-सजाई दुलहिन की भांति डोली में बैठी थी। पेरियालवार एक सजे हुए हाथी पर बैठे भगवान की महिमा गाते जा रहे थे। आगे-पीछे रथों, हाथियों, घोड़ों और पैदल सैनिकों की लंबी कतारें थीं। तरह-तरह के बाजे बज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहे थे। दसों दिशाओं से लोगों की भीड़ उमड़ रही थी। रास्तों के किनारे लोग छतों पर से फूलों की वर्षा कर रहे थे। ऐसा लगता था, मानो कोई राज-कुमारी अपने पति के देश जा रही हो।

मीलों की यात्रा करके वह जुलूस श्रीरंगम पहुंचा। कावेरी के किनारे पर स्थित भगवान रंगनाथ के मंदिर के सामने जाकर वह रुका। लोगों की अपार भीड़ के कारण उस दिन वहां तिल रखने को भी जगह नहीं थी। घंटों, शंखों तथा बाजे-गाजों के स्वर में किसीको कुछ सुनाई नहीं देता था। सब भगवान रंगनाथ और आण्डाल का जय-जयकार कर रहे थे।

आण्डाल डोली से उतरी। मन्दिर के गर्भ-गृह में उसने प्रवेश किया। शेषशायी भगवान रंगनाथ की मूर्ति को देखते ही वह रोमांचित हो उठी। धीरे-धीरे वह आगे बढ़ी और भगवान के चरणों में बैठ गई। लेकिन यह क्या! लोगों ने दूसरे ही क्षण चकित होकर देखा कि आण्डाल वहां नहीं है। वह सबके देखते-देखते अदृश्य होगई। भगवान की मूर्ति में समा गई।

कहते हैं, मीराबाई भी इसी तरह भगवान की मूर्ति में समा गई थीं। भक्ति-भाव की यह चरम सीमा है, जब भगवान और भक्त एकाकार हो जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरंगम का मंदिर

पेरियालवार का हृदय इस घटना से व्याकुल हो उठा। कुछ भी हो, आखिर उन्होंने आण्डाल को अपनी बेटी की तरह पाला था। वह शोक के महा-सागर में डूब गये। उन्होंने अपने आपको संभाला और सब भगवान की लीला है, ऐसा समझकर संतोष किया।

कहते हैं, उस अवसर पर उन्हें यह आकाशवाणी सुनाई दी थी—"भक्तराज, तुमने आण्डाल को नहीं पहचाना। उसके रूप में तो स्वयं भूदेवी ने जन्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिया था। तुम व्यर्थ क्यों दुःखी होते हो! मेरी प्रिया आण्डाल मुझसे आ मिली है, इससे तो तुमको प्रसन्न ही होना चाहिए। तुम भी अब जल्दी ही मुझसे आ मिलोगे।"

आण्डाल के जीवन की यही कहानी है, जो आज सबकी जबान पर है।

कहना न होगा कि आण्डाल के कारण श्रीविल्ली-पुत्तूर की महिमा बहुत बढ़ गई। वहां हर साल रंग-नायकी (आण्डाल) और रंगनाथ (भगवान विष्णु) का विवाहोत्सव आज भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। वहां के मन्दिर में धातु पर अंकित एक पत्र है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह आण्डाल के नाम लिखा भगवान का प्रेम-पत्र है। आज के युग में ऐसी बातों पर लोग विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन इतना तो निश्चित है कि आण्डाल अपने समय की एक महान् भक्त थी। जनता की श्रद्धा ने उसको मानवी से देवी के पद पर पहुंचा दिया है।

रंगनाथ के साथ ही रंगनायकी के रूप में आज आण्डाल की पूजा दक्षिण में सब जगह होती है। दक्षिण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के हर विष्णु-मंदिर में उसकी प्रतिमा मिलती है। वहां ऐसा घर शायद ही मिलेगा, जिसकी दीवार पर उसके चित्र न हों। 'तिरुप्पावै' और 'शूडिकोडुत्त नाच्चियार तिरुमोलि' के मधुर पदों के कारण तो वह अमर रहेगी। 'गोदा' का दूसरा अर्थ 'वाणी की देवी' करें, तो वह भी उस पर ठीक ही उतरेगा।

: ३ :

भक्ति का प्रचार पहले-पहल दक्षिण में हुआ, ऐसा कहा जाता है। उत्तर भारत के चैतन्य, विद्यापति, सूर, तुलसी, कबीर और मीरा से भी सैकड़ों साल पहले दक्षिण में कई महान् भक्त पैदा हुए। उन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भक्तों में शैव भी थे और वैष्णव भी। शिव के भक्त नायन्मार कहलाये और विष्णु के भक्त आलवार नाम से प्रसिद्ध हुए। भक्ति-भावना में बेसुध होकर उन भक्तों ने बहुत सारे अनमोल पद रच डाले। तमिल का बहुत ही मूल्यवान प्राचीन भक्ति-साहित्य इन्हीं नायन्मार और आलवार भक्तों की देन है।

आलवारों में आण्डाल की लोकप्रियता सबसे अधिक है। उसके रचे पद 'नालायिर दिव्य प्रबंधम्' के पहले भाग में मिलते हैं। यह 'नालायिर दिव्य प्रबंधम्' उस महान ग्रन्थ का नाम है, जिसमें बारहों आलवारों के पदों का संग्रह है। तामिलनाड में यह पवित्र ग्रन्थ दूसरे वेद के समान पूजित है। ग्रन्थ के चार भाग हैं। हर भाग में लगभग एक हज़ार पद हैं। पदों की संख्या चार हज़ार होने के कारण ही इसका नाम 'नालायिर' (चार हज़ार) पड़ा है।

आण्डाल ने कुल मिलाकर १८३ पद रचे। पहले के तीस पद 'तिरुप्पावै' के पद कहलाते हैं और बाकी १५३ पद 'शूडिकोडुत्त नाच्चियार तिरुमोलि' के।

तामिलनाड में मार्गशीर्ष (अगहन) मास का विशेष महत्व है। यह महीना वहां 'तिरुप्पावै' का महीना माना जाता है। 'तिरुप्पावै' शब्द 'तिरु' और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'पावै' शब्दों के मिलने से बना है। तमिल में 'तिरु' का अर्थ 'श्री' होता है और 'पावै' का अर्थ है 'व्रत' या 'त्योहार'। अतः 'तिरुप्पावै' को हम 'श्रीव्रत' भी कह सकते हैं। मार्गशीर्ष महीने में यह त्योहार हर साल बड़े उत्साह से मनाया जाता है। यह त्योहार खासकर महिलाओं के लिए है। विवाहिता स्त्रियां सुख-सुहाग के लिए और कुमारियां मनचाहे वर के लिए इस व्रत को रखती हैं। तड़के उठकर वे स्नान के लिए जाती हैं और 'तिरुप्पावै' के पद गाती हैं। जगह-जगह पर कथाएं होती हैं। भगवान की महिमा के साथ ही आण्डाल के यश का गान होता है।

तिरुप्पावै त्योहार से सम्बन्धित होने के कारण आण्डाल के तीस पदों को 'तिरुप्पावै' कहा जाता है। भागवत में गोपिकाओं के एक व्रत का वर्णन है। शायद आण्डाल को उसीसे प्रेरणा मिली। गोपिकाओं के जीवन से ही मिलता-जुलता उसका अपना जीवन था। गोपिकाओं की तरह ही उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था अपने प्रियतम कृष्ण को प्रसन्न रखना। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि उसने 'तिरुप्पावै' को बहुत अधिक महत्व दिया।

'तिरुप्पावै' के बीसों पद 'प्रभाती' या 'जागरण-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गीत' जैसे हैं। उनमें कुछ सखियों द्वारा दूसरी सखियों, कृष्ण और नंदगोप आदि को जगाने का वर्णन है।

कहते हैं, एक बार गोकुल की गोपिकाओं को कृष्ण से मिलने की मनाही कर दी गई। गांव के बड़े-बूढ़ों को कृष्ण की हरकतें पसन्द नहीं थीं। लेकिन उन्हीं दिनों अचानक अकाल पड़ा। पानी न पड़ने से हरियाली सूख गई। पशु मरने लगे। वर्षा बुलाने को यह जरूरी होगया कि गोकुल के किशोर-किशोरियों का दल 'कात्यायनी व्रत' का उत्सव मनाये। कृष्ण तो बड़े-बूढ़ों की बात सुननेवाले नहीं थे, इसलिए उनको मनाने के लिए गोपिकाओं को कहा गया। इस तरह गोपिकाओं को कृष्ण से मिलने की छूट देनी ही पड़ी। वे बड़े उछाह से एक-एक कर सखियों को जगाती हुईं कृष्ण के पास पहुंचीं और उनको उत्सव की सफलता के लिए राजी किया। आण्डाल के 'तिरुप्पावै' के पदों की रचना का मूल आधार यही पौराणिक कथा है।

: ४ :

'तिरुप्पावै' के कुछ पदों के नमूने लीजिये। सखियां प्रभाती गाती हुई कहती हैं :

"हे गोकुल की बालाओ, आज अगहन के शुक्ल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पक्ष की पूर्णिमा का शुभ दिन है। यही हमारे व्रत का ठीक अवसर है। आज के दिन ब्राह्म बेला में नदी-स्नान करने से बड़ा पुण्य होगा। यशोदा के पुत्र घनश्याम तो साक्षात् नारायण हैं। उनपर श्रद्धा और विश्वास रखने से सबको सिद्धि मिलेगी।"

(पहला पद)

"हे गोपिकाओ, कन्याओं के इस त्योहार का रहस्य मैं बताती हूं। भगवान के चरणों की महिमा गाते हुए ब्राह्म मुहूर्त में स्नान करो, अहंकार छोड़कर शक्ति के अनुसार दान-पुण्य करो। इस व्रत के समय दूध-घी न खाने, आंखों में काजल न लगाने, वेणी में फूल न सजाने और बुरे काम न करने का संकल्प करो।"

(दूसरा पद)

देश की खुशहाली किसानों की खुशहाली है। किसान तभी खुशहाल होंगे जब कि समय पर वर्षा हो और खेतों में अन्न अधिक उपजे। सखियां इसीलिए वर्षा के देवता की वंदना करती हैं। वे कहती हैं :

"हे वर्षा के देवता, तुम समुद्र के समान गंभीर हो, अपने वैभव को छिपाकर मत रखो। तुम समुद्र से जल भरकर ऊपर आकाश में उठ जाते हो। भगवान कृष्ण के श्याम शरीर के समान ही तुम्हारा रंग है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान के चक्र की तरह चमककर, शंख के समान गरजकर और शारंग धनुष से निकले तीर की तरह बरसकर तुम विश्व के प्राणियों को सुख दो।"

(चौथा पद)

"मथुरा में जन्म लेनेवाले नायक कृष्ण जमुना के तीर पर निवास करते हैं। वे अपने जन्म से माता की कोख को आदर देनेवाले तथा मायावी कार्य करनेवाले हैं। उनके चरणों में अपने आपको सौंपकर यदि हम अपने मन और वचन से उनका ध्यान करें तो हमारे पाप और अज्ञान नष्ट हो जायंगे, उसी तरह जैसे आग के छूते ही रुई जल उठती है।"

(पांचवां पद)

'तिरुप्पावै' के आगे के कुछ पदों में सखियों को जगाने और प्रभात की शोभा का सुन्दर वर्णन है :

"हे सखियो, अब निद्रा त्यागो ! देखो, सवेरा हो गया है। आकाश में विचरनेवाले पक्षी चहचहाने लगे हैं। पक्षिराज गरुड़ के स्वामी विष्णु के मंदिर में बजते शंख की आवाज क्या तुम्हें सुनाई नहीं देती है ? पूतना और अन्य मायावी असुरों का नाश करनेवाले हरि के नाम का गुण-गान करके अपने हृदय को पवित्र करने के लिए बिस्तर छोड़कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उठो !"

(छठा पद)

"क्या तुम्हें पक्षियों का कलरव नहीं सुनाई देता है ? गोकुल की ललनाओं के दही मथने की आवाज क्या तुम्हें सुनाई नहीं पड़ती है ? श्रीकृष्ण का यशोगान जो हम कर रही हैं, यह भी क्या तुम्हें सुनाई नहीं देता ? इस प्रकार सबकुछ सुनते हुए भी चुपचाप बिस्तर पर पड़े रहना ठीक नहीं है।"

(सातवां पद)

सोनेवाली एक सखी को जगते न देखकर उसकी मां उसे डांटने लगी कि वह क्यों चुपचाप पड़ी है, जबकि सारी सखियां द्वार के बाहर खड़ी होकर उसे बुला रही हैं। बाहर खड़ी सखियां यह सुन लेती हैं और कहने लगती हैं :

"हे मामी, तुम्हारी बेटी बोलती नहीं है। वह गूंगी तो नहीं होगई ? अथवा क्या वह बहरी है, जो हमारी आवाज नहीं सुनती ? क्या कारण है कि वह आज बेसुध होकर सोई हुई है ? किसीने मोहिनी निद्रा का मंत्र तो उसपर नहीं चला दिया है ?"

(नौवां पद)

"हे कृष्ण के प्रेम में डूबी हुई सखी, तुम यदि द्वार नहीं खोलना चाहती हो तो क्या जवाब देने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शक्ति भी तुममें नहीं है ? कुम्भकर्ण मरते समय अपनी निद्रा तुमको ही तो नहीं दे गया ? लगता है, तुम्हें आलस्य सता रहा है। बिस्तर के साथ-साथ आलस्य को भी छोड़ो और उठकर द्वार खोलो !"

(दसवां पद)

"बछड़ेवाली गायों को दुहनेवाले और शत्रुओं के बल का नाश करनेवाले गोपों के कुल में तुम उत्पन्न हुई हो। हे सखी, तुम रूपवती और मोर की तरह चलनेवाली हो। हमारे गान को सुनकर भी तुम किस सोच में अबतक बिस्तर पर पड़ी हो ?"

(ग्यारहवां पद)

"भैंसों के थन दूध से भरे हैं। उनसे अधिक दूध बहने के कारण घर का आंगन गीला हो रहा है। हे सखी, पशुधन से सम्पन्न होकर भी तुम चुपचाप क्यों पड़ी हो ? सबके जागने पर भी तुम्हारी निद्रा क्यों नहीं टूटती है ?" (बारहवां पद)

"भगवान ने रावण आदि का बात-की-बात में नाश किया और विभीषण के शील की रक्षा की। उन्हींके गुण हम गाती हैं। शुक्ल नक्षत्र का उदय होगया, बृहस्पति डूब गये। पंछी आहार की खोज में अपने नीड़ों से बाहर निकल पड़े। हे सखी, छिपे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छिपे कृष्ण का ध्यान करने के बजाय तुम हमारे साथ जल-क्रीड़ा करने के लिए चलो। इतना जगाने पर भी इस तरह बिस्तर पर पड़े रहना क्या उचित है ?"

(तेरहवां पद)

"घर के पिछवाड़े के पोखर में लाल कमल खिल उठे हैं। पान न खानेवाले गेरुआधारी संन्यासियों के दांत उज्ज्वल हैं। ये मंदिर में शंख बजाने के लिए जा रहे हैं। हे सखी, तुमने सवेरे ही जागने का वचन दिया था। उस वचन को तोड़ते हुए क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती ? चक्रधारी कमलनयन कृष्ण का यशोगान करने के लिए तुम अब शीघ्र बिस्तर त्याग कर उठो !"

(चौदहवां पद)

पन्द्रहवें पद में सोई हुई सखी जगकर अपनी सखियों से कहती है :

"मुझे बार-बार मत पुकारो। मैं अभी आती हूं। क्या सब जाग गये ? क्या सभी सखियां आगईं ?"

सखियां उत्तर देती हैं : "हां, सब-की-सब आगई हैं। तुम खुद बाहर आकर देख लो।"

इसके बाद के पदों में नन्दगोप, कृष्ण और नप्पिनै को जगाने का वर्णन है। नप्पिनै मुख्य गोपिका का नाम है, जिसपर कृष्ण का विशेष अनुग्रह था। कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लोगों का अनुमान है कि वही राधा हो सकती है। लेकिन वास्तव में राधा की कल्पना बाद की है। भागवत में राधा के नाम का कहीं उल्लेख नहीं है। आण्डाल का तो समय आठवीं-नवीं शताब्दी का है। कृष्ण के साथ राधा की कथाएं उसके बाद जोड़ी गई जान पड़ती हैं।

कृष्ण जगने पर सखियों से उनके आने का कारण पूछते हैं। सखियां उनके दर्शन से कृतार्थ होती हैं और उनसे व्रत की सफलता का वरदान मांगती हैं। 'तिरुप्पावै' के शेष पदों में इन्हीं बातों का सुन्दर वर्णन है। अंत में बीसवें पद में आण्डाल कहती है :

"क्षीरसागर को मथने पर उससे निकले अमृत का दान करनेवाले कृष्ण की महिमा का गान पेरियालवार की पुत्री 'गोदा' ने किया है। इनका नियमित रूप से पाठ करनेवाले लोग लक्ष्मीपति के अनुग्रह से सदा आनन्द का अनुभव करेंगे।"

संक्षेप में 'तिरुप्पावै' का यही सारांश है। इसके एक-एक पद का पाठ लोग अगहन मास में प्रति-दिन करते हैं। यह एक तरह से पदों की सुन्दर माला है, जो आण्डाल ने अपने भगवान से भेंट करने के लिए बनाई थी। इन पदों पर आगे चलकर रामानुजाचार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतने मुग्ध होगये थे कि उन्होंने इसको 'गोदा-उपनिषद्' कहना आरंभ कर दिया। वह इन पदों को तन्मय होकर गाया करते थे। इसी कारण लोग उन को 'तिरुप्पावै जीयर' (तिरुप्पावै का आचार्य) भी कहने लगे।

'तिरुप्पावै' के सभी पद बड़े सरल, मधुर और गाने योग्य हैं। वे मन को रसमय कर देते हैं। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दूर-दूर के देशों में भी इनका प्रचार है। दो हजार मील दूर स्याम देश में भी 'तिरुप्पावै' के पद गाये जाते हैं।

'शूडिकोडुत्त नाच्चियार तिरुमोलि' आण्डाल के १५३ फुटकर पदों का संग्रह है। 'शूडिकोडुत्त नाच्चियार' का अर्थ है, 'पहले माला पहननेवाली रमणी' और 'तिरुमोलि' का अर्थ है 'दिव्य वाणी'। आण्डाल भगवान से पहले स्वयं माला पहन लेती थी, उसीका संकेत यहां पर है। आण्डाल की यह दिव्य वाणी सचमुच अनुपम है। मीरा की भांति वह भी कृष्ण को अपना पति मानती थी। उसके मन में जब भी जो भाव उठते थे, उन्हें वह पदों का रूप दे डालती थी। किसी पद में प्रेम की प्रबलता है तो किसीमें विरह की व्याकुलता है। किसी पद में वह कृष्ण को

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उलहना देती है तो किसीमें मिलन का विश्वास प्रकट करती है। ये पद विवाह आदि सामाजिक अवसरों पर आज भी तामिलनाड में गाये जाते हैं। नमूने के रूप में 'शूडिकोडुत्त नाच्चियार तिरुमोलि' के दो प्रसिद्ध पदों के भावार्थ नीचे दिये जाते हैं।

एक रात आण्डाल ने स्वप्न में देखा कि उसका विवाह भगवान कृष्ण के साथ होनेवाला है। धूमधाम से तैयारियां हो रही हैं। सवेरा होने पर उसने उसका वर्णन अपनी सखियों से इस प्रकार किया :

"हे प्रिय सखी, मैंने सपने में देखा कि सर्वगुण-सम्पन्न भगवान नारायण इस नगर में प्रवेश कर रहे हैं। उनके साथ हजार हाथियों का जुलूस है। नगरवासी उनका स्वागत जल-भरे स्वर्ण-कलशों से कर रहे हैं और सारे नगर को तोरणों से सजाया जा रहा है।"

"प्रिय सखी, मैंने सपने में देखा कि इन्द्र आदि देवतागण मेरे यहां आये हैं। मुझे वधू बनाने की बात वे पक्की करते हैं। समधी लोग आपस में सारी बातें तय करते हैं। फिर दुर्गा नाम की मेरी ननद विवाह की साड़ी पहनाकर मुझे फूलों से सजाती है।"

दक्षिण में यह प्रथा आज भी प्रचलित है कि विवाह से पहले वधू के घर में वर-पक्ष के लोगों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही आगमन होता है और वे सबकुछ देख-सुनकर विवाह से सम्बन्धित सारी बातें तय करते हैं। ऊपर के पद में इसीकी ओर संकेत है। इस तरह के बहुत-से पद आण्डाल द्वारा रचित हैं, जिन्हें दक्षिण के सामाजिक जीवन का दर्पण कहा जा सकता है।

आण्डाल और मीरा दोनों ही कृष्ण के प्रेम-रस में सराबोर थीं। दोनों ही कृष्ण को अपना प्रियतम मानती थीं। दोनों उन्हींकी प्रेम-भावना में जीवन-भर बेसुध रहीं। दोनों के ही मधुर पद जन-जन के कण्ठ में बसे हुए हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'मंडल' द्वारा प्रकाशित

समाज-विकास-माला का जीवनी-साहित्य

१. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
२. गौतम बुद्ध
३. चैतन्य महाप्रभु
४. बाहुबली और नेमिनाथ
५. संत तुकाराम
६. हजरत उमर
७. बाजीप्रभु देशपांडे
८. तिरुवल्लुवर
९. कस्तूरबा गांधी
१०. नरसी महेता
११. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
१२. संत ज्ञानेश्वर
१३. रामकृष्ण परमहंस
१४. समर्थ रामदास
१५. हारूं-अल-रशीद
१६. तीर्थंकर महावीर
१७. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
१८. नाना फड़नवीस
१९. गुरु नानक
२०. राजेन्द्रबाबू का बचपन
२१. महामना मालवीय
२२. देवताओं का प्यारा
२३. हमारे मुस्लिम संत
२४. स्वामी विवेकानंद
२५. गोरा-बादल
२६. शेख सदी
२७. शंकराचार्य
२८. अहिल्याबाई
२९. संत नामदेव
३०. सेवामूर्ति ठक्कर बापा
३१. ईश्वरचंद्र विद्यासागर
३२. झलकारी
३३. लल्लेश्वरी
३४. शंकरदेव
३५. रामानुजाचार्य
३६. बाल गंगाधर तिलक
३७. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
३८. संत एकनाथ
३९. लाला लाजपतराय
४०. गणेशशंकर विद्यार्थी
४१. शेरे पंजाब
४२. अजीजन
४३. मिर्जा ग़ालिब
४४. संत पोतना
४५. संत फ्रांसिस
४६. राजा राममोहन राय
४७. भारतेंदु हरिश्चंद्र
४८. दक्षिण की मीरा
४९. गामा पहलवान
५०. तानसेन

प्रत्येक का मूल्य चालीस नये पैसे

१७२

४० नये पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu